>

Title : Acute shortage of power in the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

महोदया, किसी भी देश या राज्य के पूर्ण विकास के लिए बिजली आधार-स्तम्भ और रीढ होती है, लेकिन मुझे बड़े दुख के साथ इस सम्माननीय सदन में कहना पड़ रहा है कि बिहार राज्य में गम्भीर संकट के लिए केन्द्र सरकार जिम्मेदार है। जितनी बिजली की जरूरत बिहार राज्य को है, केन्द्र सरकार उतनी बिजली नहीं दे पा रही है। बिहार में अभी बिजली संकट है और बरकरार रहेगा, क्योंकि बिजली की खपत और मांग बढ़ रही है। कृषि के लिए बिजली एक अभिन्न अंग है। बिना बिजली के कृषि की कल्पना नहीं की जा सकती है, फिर भी केन्द्र सरकार, बिहार राज्य को उसकी वर्तमान जरूरत 1600 मैगावाट की जगह केवल 800 से 900 मैगावाट से ज्यादा बिजली मुहैया नहीं करा पा रही है। राज्य में बिजली का उत्पादन नहीं बढ़ पा रहा है। राज्य सरकार बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए काटे और बरौनी ताप बिजली केन्द्रों में सुधार ला रही है। नए ताप बिजली केन्द्रों के निर्माण कार्य चल रहे हैं, लेकिन उनके निर्माण में भी बाधाएं आती जा रही हैं। वहां एन.टी.पी.सी. के कई अपने केन्द्र हैं, वे भी कम बिजली उत्पादन कर रहे हैं। जो बिजली राज्य को केन्द्र से मिलती है, उस मे से कुछ बिजली उसे को रेल और सैनिक छावनियों को देनी पड़ती है। राज्य सरकार ने कोशिश की है कि पनबिलजी से बिजली हासिल करे और गैर-परम्परागत स्रोतों से बिजली उत्पादन हो सके, लेकिन उसमें भी बाधा पड़ रही है।

मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि बिजली संकट के मुद्दे पर केन्द्र सरकार, बिहार सरकार के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है और खासकर राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना राज्य में पूरी तरह फेल हो रही है। उसमें बी.पी.एल. परिवारों को बिजली दी जाती है, लेकिन मैं दावा करता हूं कि बिहार राज्य के नालंदा जिले में 1000 बी.पी.एल. परिवारों को भी बिजली का लाभ नहीं मिल पा रहा है। जो परिवार इस योजना का वास्तव में लाभ उठा रहे हैं, उन्हें इस योजना के अन्तर्गत केवल 16 केवीए के ट्रंसफॉर्मर के माध्यम से बिजली दी जाती है। वे भी थोड़े ही दिनों में ही जल जाते हैं। इसलिए मैं सरकार से मांग करता हूं कि सभी बी.पी.एल. परिवारों को 100 केवीए के ट्रंसफार्मर के माध्यम से बिजली देने की कृपा की जाए। यही बात कह कर मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं।